किसी सजन के घर "सतवस्तु के कुदरती शास्त्र" के अखंड-पाठ की

डयूटी-योग्यता-युक्ति

(सेवा-भाव)

(भाग-4)

सतयुग दर्शन ट्रस्ट (रजिस्टर्ड)

किसी सजन के घर "सतवस्तु के कुदरती शास्त्र" के अखंड-पाठ की डयूटी-योग्यता-युक्ति

(सेवा-भाव)

(भाग-4)

सतयुग दर्शन ट्रस्ट (रजिस्टर्ड)
'वसुन्धरा'
निकट गाँव भोपानी,
भोपानी - लालपुर रोड, फरीदाबाद

प्राक्कथन

युग-युग में कुदरती ग्रन्थ आते हैं, जिनमें कुदरत के सत्य का वर्णन होता है और उस वर्णित सत्य को ग्रहण करना मनुष्य जीवन-काल में अति आवश्यक होता है। यहां विडम्बना यह है कि इन ग्रन्थों में वर्णित सत्य को कोई विरला ही समझ व धारण कर पाता है और फिर वह असत्यता में विचरते हुए सजनों को सत्य के संग की प्रवृत्ति में ढालने का सत्संग द्वारा यत्न करता है, ताकि अधिकाधिक सजन सत्वगुणी अर्थात् उत्तम प्रकृति वाले बनें। सत्संग में फिर अध्यात्म-सम्बन्धी चर्चा होती है। इस प्रकार समाज में ऐसी धार्मिक सभा का गठन होता है और उस सभा में आने वाला हर सजन सत्संगी अर्थात् अच्छी संगति में रहने वाला कहलाता है और वह सब से मेल-जोल रखने वाला माना जाता है।

सत्संग एक प्रकार से सजनों का संग साथ है और सत्संग द्वारा ही आत्मतत्व अर्थात् जीवन शक्ति का सत्य रूप से ज्ञान होता है। जो सजन प्रकृति का वह गुण जो अच्छे कामों की ओर प्रवृत्त करता है, उसे धारण कर लेता है तो वह सत्वगुण की प्रधानता के कारण सत्यवान, दृढ़ संकल्प वाला, सदाचारी, धीर, धर्मशास्त्र का ज्ञाता, धर्म करने वाला, धार्मिक शिक्षा देने वाला, पुण्य-कार्य करने वाला, मर्यादा-पुरुषोत्तम कहलाता है। यही श्रेष्ठ गुण-धारी फिर धर्म अधिकारी न्यायाधीश की भांति सत्संग में आने वाले हर सजन की परख कर उसमें निहित सत्य का सरलता व स्पष्टता से बोध कराते हुए सत्संगियों के मन में उस सत्य ज्ञान की उत्तमता जता उसके प्रति उन्हें उमंगित व उत्साहित करता है।

उपरिलिखित उद्देश्य-पूर्ति के लिए सत्संग व्यवस्था का प्रबन्ध सुचारु रूप से बनाए रखने के लिए एक ऐसे विधान की आवश्यकता होती है जो सत्संग के सभी सदस्यों को भली प्रकार से कार्य अथवा आचरण करने के लिए बाध्य करे ताकि हर सजन आदेश पालन की योग्यता से भरपूर हो और उस सजन को मान-अपमान, वड-छोट, अमीरी-गरीबी का भेद-भाव न छू पाए या प्रभावित न कर पाए क्योंकि केवल इसी प्रकार ही सत्संग में समभाव-समदृष्टि और एकता का वातावरण पनप सकता है और बना रह सकता है। इसीलिए इस पुस्तक की

रचना आवश्यक समझी गई ताकि हर सभा संचालक का प्रयत्न फलीभूत हो और कलयुगी-जीवों का उद्धार हो सके। उनके हृदय में भी प्रकाश-किरण ज्योति-पुंज हो उठे और वे इसी जीवन में समवृत्ति एवं समदृष्टि बन इस मनुष्य चोले का भरपूर आनन्द और सुख मान सकें।

इस सन्दर्भ में सेवा-भाव का महत्व देखते हुए सत्संग की सत्संगियों द्वारा हर प्रकार की सेवा का वर्णन कर उनको उस सेवा के लिए योग्यता और युक्ति के प्रति जागरूक बनाए रखने के लिए प्रयास किया गया है। इसीलिए अब हर सजन का कर्तव्य हो जाता है कि वह इस पुस्तक में लिखित विधान का गंभीरता और निर्भयता से पालन करता हुआ, सत्संग में आने वाले हर सत्संगी को आत्मिक उन्नति प्रदान करने के लिए "मैं" को त्याग कर, सहनशील बन निष्काम-भाव से अपनी योग्यता अनुसार सेवा करे ताकि हर मन, परिवार और कुल संसार में शांति का साम्राज्य स्थापित हो। **यही सतयुग है, क्योंकि :**

सतवस्तु में विचार ते सतजबान होसी,
एक दृष्टि एकता महान होसी,
न जप, न तप, न भजन, न बन्दगी,
एक अवस्था ओ जगत जहान होसी।

जिससे हर सजन अपनी असलियत की पहचान कर, जेहड़ा मन-मन्दिर प्रकाश है ओही असलियत ज्योति-स्वरूप मेरा अपना आप, पर खड़ा हो एक निगाह एक दृष्टि और एक दर्शन पर परिपक्वता से ठहर जड़-चेतन में, उसी एक दर्शन का आभास कर सजन-भाव में गुढ़ सकेगा। **याद रखो:-**

असलियत स्वरूप है जे ब्रह्म
जैंदा रूप रेखा नहीं रंग।
ईश्वर है अपना आप प्रकाश
ईश्वर है जे अजपा जाप।
विचार ईश्वर आप नूं मान
विचार ईश्वर आप नूं ही मान।

अनुक्रमणिका

क्रमांक	ड्यूटी का विषय	पृष्ठांक
1.	जहाँ पाठ रखा जाना है उस घर का वातावरण कैसा हो?	1
2.	पाठ रखवाने की सामान्य नीति	2-3
3.	बिछाई	4
4.	द्वारे से शास्त्र की सवारी पाठ वाले घर ले जाना	5-6
5.	तिलक	7
6.	स्टेज पर विधिनुसार पाठ आरम्भ करना	8-9
7.	साज (हारमोनियम, ढोलकी व रोड़ा) बजाना	10
8.	शास्त्र पढ़ना	11
9.	जोत	12
10.	आरती	13
11.	प्रशाद बनाना	14
12.	भोग लगवाना	15
13.	प्रशाद देना	16
14.	बिछाई समेटना	17

जहाँ पाठ रखा जाना है उस घर का वातावरण कैसा हो? 1

जिस घर में पाठ रखना है वहाँ तीनों दिन शुक्रवार बिछाई वाले दिन से लेकर पाठ की समाप्ति वाले दिन अर्थात् रविवार तक मीट, अण्डा, शराब, सिगरेट आदि का किसी घर के या बाहर के सजन ने सेवन नहीं करना। हर प्रकार से पूर्ण पवित्रता बनाए रखनी है। दूसरा इन दिनों में घर का वातावरण पूर्णतया शांत बना रहे। कोई सजन भी आपस में निंदा, झूठ, क्रोध आदि न करें और घर के सभी सदस्य इस पाठ के कार्यक्रम में प्रसन्नता से भाग लें। घर का हर सजन यत्न करे कि वह अधिकाधिक समय देकर ग्रन्थ को प्रेम पूर्वक शांत मन से सुने। यह सब अति आवश्यक है क्योंकि पाठ का लाभ या घर के वातावरण का शुद्धिकरण तभी हो सकता है जब सजन इच्छा से उसमें भाग ले।

घर के अन्दर का चारों तरफ का वातावरण शिक्षाप्रद बनाने व घर में प्रवेश पाने वाले बेनामी सजनों को सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ से परिचित कराने के लिए घर में चारों तरफ दिवारों पर इस द्वारे की नीति से सम्बन्धित बैनर लगा सकते है। जैसे :

'शब्द है गुरू शरीर नहीं है'।
'सजन है आत्मा श्री साजन है परमात्मा'।
वगैरह-वगैरह।

पाठ शुरु होने से पहले सजनों को सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के बारे में थोड़ा बता दे तो अच्छा है।

पाठ रखवाने की सामान्य नीति 2

कोई भी सजन सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ का अखंड पाठ पहले आज्ञा व प्रशाद लेकर करवा सकता है जिसमें सत्संग के अन्य सजन भी जा सकते है। जिस सजन ने अपने घर पाठ रखवाना हो उसको चाहिए कि वह मंगलवार व रविवार को सत्संग पर जाकर अपने घर पाठ रखवाने की आवाज देते हुए सब सजनों को आमंत्रित करे और अपने घर का पता व रास्ता नोट करवा दे जिससे आने वाले सजनों को किसी कठिनाई का सामना न करना पड़े। अगर वह सजन चाहे तो आने वाले सजनों के लिए बस या अन्य किसी वाहन का प्रबन्ध करा सकता है। सजनों की सुविधा के लिए उस को चाहिए कि अपने घर के पास मुख्य स्थान के आगे रास्ता समझाने के लिए चूने से लाईन लगा दे या कोई अन्य निशानी या चिन्ह लगा दे। वह बेनामी सजन जो नित्य प्रति नियम से सत्संग में आता है, ग्रन्थ व द्वारे के प्रति उसकी व उसके परिवार वालों की असीम श्रद्धा हो तथा साथ ही प्रेमी भी हो वह भी सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ का अखंड पाठ अपने घर रखवा सकता है।

याद रहे :

अखंड पाठ का आरम्भ समय - शनिवार प्रातः नौ बजे तथा समाप्ति - रविवार को शास्त्र के अखंड पाठ का भोग डालने पर होनी है।

शास्त्र का पाठ अखंड चलना है।

द्वारे पर से सवारी लाने व वापिस ले जाने का प्रबन्ध जिन सजनों के घर पाठ रखा गया है उन्होंने करना है।

पाठ में प्रयोग आने वाली सामग्री का प्रबन्ध पाठ प्रारम्भ होने से पहले ही घर के सजनों ने करके रखना है। यह सूची इस प्रकार है :-

मेवा, जोत की रुई, तिलक के लिए सिंदूर, धूप, हार, बरफ़ी, संगत को देने के लिए मिश्री-इलायची।

आटा/सूजी	–	**5 किलो**
चीनी	–	**10 किलो**
घी	–	**5½ किलो**
		(प्रशाद के लिए : 4½ किलो)
		(जोत के लिए : ½ किलो)
		(पंजीरी के लिए : ½ किलो)

इसके अलावा जो भी ड्यूटी वाला सजन आवश्यक सामान घर वाले सजन को बताए वह भी पाठ शुरू होने से पहले ही प्रबन्ध कर रखना है। प्रशाद की सामग्री आवश्यकतानुसार घटाई-बढ़ाई जा सकती है।

संगत को पानी पिलाने, उनके जोड़ों का सही सुरक्षित प्रबंध करने व माईक इत्यादि का प्रबंध करने का कार्यभार भी घर वाले सजनों को ही व्यवस्थित करके रखना है।

नोट : सत्संग 'सतवस्तु के सत्संग की विधियाँ' वाली पुस्तक में वर्णित नीति के अनुसार ही करना है।

बिछाई 3

योग्यता

(1) प्रौढ़ अवस्था या उससे बड़ी उम्र का सजन (2) नामी हो (3) गाना पहना हुआ हो (4) ड्यूटी के प्रति ज्ञान हो (5) ठहराव हो (6) विचारवान (7) इच्छुक (8) प्रेमी व श्रद्धावान (9) सादा पहरेवा (10) स्वस्थता (शारीरिक व मानसिक दोनों) (11) स्वच्छता (अन्दरूनी ख्याल, संकल्प व दृष्टि की तथा बैहरूनी शारीरिक व रैहणी बैहणी की दोनो) (12) नीतिवान, जो परमार्थ समझता हो (13) शांतिप्रिय।

युक्ति

इस कार्य के लिये जिन्हें सत्संग की नीतियों का पूरा ज्ञान है वह दो सजन ही बिछाई करने जाएगें। बिछाई पाठ रखने से एक दिन पहले शुक्रवार को पाठ रखने वाले के घर जाकर करनी है। बिछाई से पूर्व उन्होंने प्रार्थना, चरण शरण और सात बार 'साडा है सजन राम-राम है कुल जहान' अपने मन में करना है। बिछाई सिर ढक के, अति प्रेम पूर्वक, ध्यान स्थिर होकर, नाम-अक्षर चलाते हुए, मौनव्रत में रहकर करनी है। किसी किस्म का उतावलापन या क्रोध आदि का स्वभाव नहीं दिखाना ताकि पाठ रखने वाले के परिवारजनों पर भी अच्छा प्रभाव पड़े और वे भी उनकी रैहणी-बैहणी और बोल-चाल से सीख लें। याद रहे कि इन सजनों ने बिछाई के लिए रूमाले, साज इत्यादि द्वारे से ही गिन कर ले जाने हैं और अन्य आवश्यक सामान की लिस्ट पहले से ही पाठ रखने वाले सजन को दे देनी है ताकि बिछाई में कठिनाई या देरी न हो। पाठ के दौरान पाठ वाले सजन के घर का वातावरण कैसा हो यह पहले से ही घर वाले सजनों को समझा देना है और अगर वह कोई मजबूरी दिखलाए तो उसके घर पाठ नहीं रखना।

द्वारे से शास्त्र की सवारी पाठ वाले घर ले जाना 4

योग्यता

(1) शास्त्र के प्रति श्रद्धावान सजन (2) अगर सवारी किसी स्त्री ने ले जानी है तो वह मासिक धर्म से निवृत्त हो (3) प्रेमी हो (4) सादा पहरेवा हो।

युक्ति

पाठ रखवाने वाले के घर से दो सजन गुलानारी रंग के दुपट्टे सिर पर करके द्वारे से सवारी अपने घर बड़े आदर के साथ प्रेमपूर्वक लेने जाएगें। सवारी, द्वारे से शनिवार सुबह आठ बजे लेने पहुँचना है। अगर घर नज़दीक हो तो सवारी सजन ने सीस पर रख कर पैदल ले जानी है और यदि घर दूर हो तो वाहन पर ले जानी है और फिर घर से कुछ दूरी पर उतरकर सवारी सीस पर रख लेनी है। सवारी प्रार्थना, चरण-शरण करके और पाँच जयकारे लगाकर उठानी है। एक सजन शास्त्र सीसपर उठाकर आगे चलेगा और पीछे दूसरा सजन कीर्तन वाली पुस्तकों को सीस पर धारण कर हाथ में चंवर ले, शास्त्र पर सारे रास्ते चंवर झुलाते हुए उसके पीछे धीरे-धीरे विश्रामपूर्वक यह शब्द कहते हुए बढ़ेगा

"चलो चलिए सजन महाबीर जी दे पास दासियाँ रल चलिए"

पीछे पीछे सारी संगत सवारी की चरण धूल लेते हुए यही कीर्तन साथ में बोलते हुए चलेगी। सवारी वाले दोनों सजन नंगे पाँव होंगे और अन्य सजन भी नंगे पांव ही हों तो अच्छा है। घर के द्वार पर पहुँचकर घर वाले सजनों ने सवारी की आगवानी खुशी-खुशी 'आओ जी-जी आयां नूं, बोलते हुए करनी है और उस पर जयमाला डाल कर फिर से पाँच जयकारे लगाकर सवारी यथास्थान आगे ले जानी है। यथास्थान सवारी को विराजमान करते हुए साथ में यह बोलते रहना है :

'जय सीता राम, जय सीता राम, जय सीता राम बोल.....

फिर शास्त्र की सवारी लाने वाले सजन के हाथ में विधिनुसार चंवर देकर ग्रन्थ पर बैठने को और चंवर झुलाते रहने को कहना है। चंवर झुलाने वाले सजन ने स्टेज पर बैठ शास्त्र का प्रकाश करना है और मन में बड़े प्रेम से नाम अक्षर चलाते रहना है।

तिलक 5

योग्यता

(1) प्रौढ़ अवस्था का सजन जिसे युक्तिनुसार तिलक बनाना आता हो और जो सभा में मंगलवार तिलक लगाने की ड्यूटी देता रहा हो (2) दृष्टि कंचन व ठहरी हुई हो (3) समवृत्ति यानि सजन भाव व समभाव पर ठहरी हुई हो (4) नामी हो (5) गाना पहना हुआ हो (6) प्रेमी व श्रद्धावान (7) इच्छुक (8) सादगी प्रिय (9) स्वच्छता (अन्दरूनी - जिव्हा, ख्याल व संकल्प की, बैहरूनी - शरीर की, व रैहणी-बैहणी की दोनों हों) (10) सद्भावना से प्रेरित हो (11) विचारवान।

युक्ति

तिलक चाँदी की कटोरी में बनाना है। फिर सिर ढक करके मन में प्रार्थना चरण शरण, सात बार 'साडा है सजन राम-राम है कुल ज़हान' करके चाँदी की तीली से तिलक लगाना आरम्भ करना है। सबसे पहले तिलक अनुभव द्वारा सजन श्री शहनशाह महाबीर जी को और फिर अपने इष्ट को अन्दर लगाना है। फिर तिलक पहले शास्त्र के आगे बैठे सजन को लगाना है तत्पश्चात् सारी संगत को। तिलक लगाने वाले सजन की एक निगाह एक दृष्टि हो और वह तिलक लगाते समय-वह साजन सज रहा है, उस दर्शन को सामने रख तिलक लगाए।

पहले तिलक लगाने वाला सजन तिलक लगाना आरम्भ कर जितनी संगत बैठी हुई है, उनके मस्तक पर जाकर लगाएगा फिर स्टेज के पास बैठ जाएगा और फिर बाद में आने वाले सजनों के मस्तक पर वहीं बैठे-बैठे तिलक लगाएगा। तिलक लगाने की ड्यूटी के दौरान मन में नाम अक्षर चलाते रहना है।

तिलक वाले सजन ने संगत को तिलक लगाते समय थोड़ी थोड़ी ईलायची-मिश्री भी बांटनी है।

स्टेज पर विधिनुसार पाठ आरम्भ करना 6

योग्यता

(1) मासिक धर्म से निवृत्त हो (2) प्रेमी व श्रद्धावान हो (3) शब्द उच्चारण स्पष्ट व शुद्ध हो (4) सुरों का ज्ञान हो (5) आवाज सुरीली व मीठी हो (6) शब्दों के साथ जुड़ कर बोल सकता हो (7) उसे विधिनुसार पाठ आरम्भ करने की नीति का ज्ञान हो (8) हौं-मैं से रहित हो (9) धैर्यवान (10) शांतिप्रिय (11) सादा पहरेवा हो (12) स्वच्छता (दोनों अन्दरूनी जिव्हा ख्याल की संकल्प की व दृष्टि की और बैहरूनी शारीरिक व रैहणी बैहनी की) (13) गृहस्थ आश्रम में ठीक विचरता हो।

युक्ति

स्टेज पर सादे लिबास में गुलानारी रंग का दुपट्टा ओढ़ कर-बैठना है। पहले सब सजनों को मन में प्रार्थना व सात बार 'साडा है सजन राम-राम है कुल जहान' बोलने को कहना है फिर सब सजनों को मन में सजन श्री शहनशाह हनुमान जी और अपने इष्ट देव का आभास कराते हुए मन में ही दण्ड्रोत वंदना करने को कहना है। इसके उपरान्त दण्ड्रोत वन्दना का दोनों में से एक कीर्तन बोलना है और सबको मुस्कुराहट से पीछे उत्तर देने को कहना है:

"श्री रामचन्द्र जी दिया हक्लां देखो-कैसियां ही ओ आवन जी"

या

"आओ आओ मेरे साजन प्यारिया....."

तत्पश्चात् भजनों वाली पुस्तक में से एक भजन सब सजनों ने मिल कर साथ बोलना है। विधि बोलने वाले सजन ने पाठ आरम्भ होने से पूर्व होने वाली विधि को पूरा करने के पश्चात् सब को प्रार्थना व चरण-शरण मन में करने को कहना है तथा स्वयं भी प्रार्थना व सात बार, 'साडा है सजन राम-राम है कुल ज़हान' बोलकर यह क्रम से बोलते हुए पाठ की विधि आरम्भ करनी है:-

कथा आरम्भत होत है सुनो वीर हनुमान
श्री राम ते लक्ष्मण जानकी सदा करो कल्याण

सजन सियापति रामचन्द्र जी की जय।
सजन पवन सुत हनुमान जी की जय।
सजन उमापति महादेव जी की जय।
बोल सजन श्री कृष्ण बलदेव जी की जय।
बोल सतवस्तु के वाली श्री साजन जी की जय।

जित्थे तुसां शान्ति जानो, ओथे तुसां शक्ति पछानो।-2
जित्थे तुसां शान्ति जानो, ओथे तुसां पवन पछानो।-2
ऐ हैन साडे शक्ति माता, ऐ हैन त्रिलोकी दे दाता।-2
संग है जनक जननी, संग है जनक जननी।
सब कुछ है इन्हां दे कोलों, प्रणाम इन्हां अगो करनी।
प्रणाम इन्हां अगो करनी, प्रणाम इन्हां अगो करनी।
सब कुछ है इन्हां दे कोलों, प्रणाम इन्हां अगो करनी।

चरण-शरण सजन श्री शहनशाह हनुमान जी दी वन्दना करां बारम्बार
दास सीस धरे चरणां उत्ते, सजन त्रिभुवन पति रघुनाथ।

सजन सिया पति रामचन्द्र जी की जय
सजन पवन सुत हनुमान जी की जय
सजन उमा पति महादेव जी की जय
बोल सजन श्री कृष्ण बलदेव जी की जय
बोल सतवस्तु के वाली श्री साजन जी की जय।

फिर **'धन मेरे सजन श्री शहनशाह हनुमान जी महाराज सच्चे पातशाह जी'** - दो बार बोलकर सतवस्तु के कुदरती-शास्त्र का अखंड पाठ आरम्भ कर देना है। शास्त्र पढ़ने वाला सजन गुलानारी दुपट्टा लेकर ही शास्त्र पढ़े। शास्त्र वैसे तो स्त्री और पुरुष दोनों ही सजन पढ़ सकते है परन्तु रात्रि में केवल पुरुष सजन ही शास्त्र पढ़ने की ड्यूटी देंगें। शास्त्र पढ़ने की ड्यूटी एक-एक घण्टे बाद बदलते रहना है।

साज (हारमोनियम, ढोलकी व रोड़ा) बजाना

7

योग्यता

(1) साज बजाने में अनुभवी (2) नामी, प्रेमी व श्रद्धावान हो (3) सुरों का ठीक ज्ञान हो (4) शब्दों के साथ जुड़ कर साज बजा सकता हो (5) शुद्ध, स्पष्ट शब्द उच्चारण हो (6) हौं-मैं से रहित (7) स्वस्थता (8) धैर्यवान (9) शांतिप्रिय (10) स्वच्छता (दोनों अन्दरूनी - जिव्हा ख्याल, दृष्टि व संकल्प की व बैहरूनी - शारीरिक व रैहणी-बैहणी की) (11) सादगी प्रिय।

युक्ति

बाजा बजाने वाले सजन ने आवाज़ और सुर का तालमेल एकरस रखना है ताकि एक-एक शब्द संगत को स्पष्टता से सुनाई दे। ढोलक की ताल का तालमेल, स्टेज से उच्चारित हो रहे शब्दों व लय से मेल खाना अत्यन्त आवश्यक है। इसके लिए ढोलक वाले सजन का ध्यान स्थिर बना रहे और स्टेज से उच्चारित लय उसके मस्तिष्क में गूँजती हुई ढोलक पर ताल दे। इस क्रिया को सक्रियता से निभाने के लिए ढोलक वाला सजन आँखे बंद करके, निभाने में सक्षम हो तो अच्छा है, वरना आँखें खोल कर स्टेज पर बोलने वाले सजन की तरफ देख सकता है। स्टेज से बुलने वाले हर शब्द का उत्तर उसी लय में देने से इस क्रिया में और भी गति बन सकती है। यहाँ यह याद रहे, शब्द उच्चारण हर सजन को ठीक प्रकार से समझ आए। इसके लिए साज नर्म रखना है और रोड़ा न ही बजाएं तो अच्छा है।

शास्त्र पढ़ना 8

योग्यता

(1) नामी, गाना पहने हुए (2) प्रेमी व श्रद्धावान (3) मासिक धर्म से निवृत्त (4) कंचन सजन (5) ब्रह्मचर्य व्रत पर ठीक (6) स्वस्थ (7) 'हौं'-'मैं' से रहित (8) सादगी प्रिय (9) धैर्यवान व शांतिप्रिय।

युक्ति

पाठ आरम्भ हो जाने के बाद निश्चित योग्यता वाले सजन एक-एक घण्टे बाद बारी बदल कर शास्त्र को पढ़ सकते हैं। शास्त्र बड़े प्रेम से और ध्यान स्थिर होकर पढ़ना है। शास्त्र पढ़ते समय अन्दर अफुर अवस्था बनी रहे ताकि पढ़े जाने वाले शब्दों का भावार्थ अन्दर स्पष्ट हो। आस-पास कुछ भी घटित होता रहे, पर शास्त्र पढ़ने वाले सजन का ध्यान शब्दों के भावों में जुड़ा रहे इधर-उधर न दौड़े। पढ़ने में एकरसता हो। एक एक शब्द को ध्यान से समझना है। अनुभव यह करना है कि महाराज जी हृदय में विराजमान हैं। ख्याल इसी अनुभव में ठहरा रहे और मन में हर वक्त अक्षर चलता रहे। हर घंटे बाद की ड्यूटी बदलते समय पहले सजन ने तब तक पढ़ते रहना है जब तक कि दूसरा सजन उन शब्दों को जो पहला सजन पढ़ रहा है, पकड़ न ले। फिर पहला सजन उठ सकता है। प्रत्येक घंटे बाद ड्यूटी में आने वाला सजन स्टेज पर प्रार्थना-चरण-शरण और 'सात बार 'साडा है सजन राम-राम है कुल जहान' करके अफुर होकर बैठे। ड्यूटी से उठने वाले सजन ने चरण-शरण नहीं करनी है। रात को शास्त्र केवल पुरुष सजनों ने पढ़ना है और यदि किसी जगह शास्त्र पढ़ने वाले पुरुष सजन अधिक न होवें तो प्रौढ़ अवस्था वाले स्त्री सजन ही रात को शास्त्र का पाठ पढ़ेगे। ध्यान रहे शास्त्र पढ़ने वाले सजन का शब्द उच्चारण स्पष्ट और शुद्ध हो। लय व आवाज ऐसी हो जो सुनने वालों का मन खींच ले तथा वह सजन ध्यान स्थिर होकर शब्दों के साथ जुड़ कर बोल सकता हो।

सांयकाल आरती आरम्भ होने से कुछ समय पहले कीर्तन भी बोल सकते हैं। इसी प्रकार पाठ की समाप्ति के पश्चात् भी एक दो कीर्तन बोल सकते हैं।

जोत 9

योग्यता

(1) पाँच प्यारों में से एक हो (2) नामी हो (3) गाना पहने हुए हो (4) ड्यूटी के प्रति ज्ञान हो (5) कंचन सजन (6) ठहराव हो (7) प्रेमी हो (8) कर्तव्यपरायण (9) सादगी प्रिय हो (10) अगर स्त्री हो तो मासिक धर्म से निवृत्त।

युक्ति

जैसे ही 'चरण शरण सजन श्री शहनशाह हनुमान जी दी वन्दना करां बारम्बार' बोलने के साथ सतवस्तु के कुदरती शास्त्र का पाठ आरम्भ हो तो स्टेज के नीचे चौकी के पास बैठे सजन ने जोत प्रजवल्लित करनी है। जोत पर बैठने वाला सजन गुलानारी रंग का दुपट्टा करके बैठेगा।

जोत बनाने की विधि इस प्रकार है:-

एक कटोरी में थोड़ा सा घी डालकर एक थाली में रखना है। फिर रुई की बट बना कर घी में डुबोने के पश्चात् उस कटोरी के मध्य में इस तरह से रखनी है कि वह गिरे नहीं। यह जोत पाठ के आरम्भ होते ही प्रज्वलित कर देनी है और उस पर एक काँच की चिमनी रख देनी। ध्यान रहे फिर यह जोत समाप्ति तक अखंड जगती रहे इसका ड्यूटी वाले सजन ने खास तौर पर ध्यान रखना है जोत की ड्यूटी वाले सजन ने मन में नाम अक्षर चलाते हुए अफुर अवस्था बनाए रखनी है।

नोट:- ध्यान रहे जो सजन जोत पर बैठेगा वही सजन खज़ाने का भी ध्यान रखेगा और पंजीरी का प्रशाद भी आने वाले सजनों को देता रहेगा।

आरती 10

योग्यता

पाठ के दौरान शनिवार व इतवार को आरती करने वाले सजन की योग्यता:

(1) मासिक धर्म से निवृत हो (2) दोनों आरतियां ज़बानी आती हों (3) शुद्ध आचरण वाला हो (4) ड्यूटी के प्रति ज्ञान हो (5) नामी (6) इच्छुक (7) प्रेमी (8) श्रद्धावान (9) सादगी प्रिय।

इतवार पाठ की समाप्ति पर आरती जिस घर वाले सजन ने करनी है - अगर वह स्त्री हो तो उसका मासिक धर्म से निवृत्त होना आवश्यक है।

युक्ति

काँसे की थाली में चाँदी की कटोरी रख या आटे की कटोरी बना देसी घी डालकर रूई की वट बना कर आरती शनिवार सुबह 10 बजे पाठ के विधिनसार आरम्भ होने के पश्चात् और सायं सूर्यास्त के समय तथा इतवार पुनः 10 बजे जोत जला कर ग्रन्थ के आगे एक सजन ने करनी है। आरती की थाली दोनों हाथों से पकड़ बड़े प्रेम-पूर्वक धीरे-धीरे बाएँ से दाएँ घुमाते हुए स्पष्टता से बोलते हुए करनी है। पहले, 'सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की आरती', उनका ध्यान लगा कर और फिर रघुवंशमणि जी की आरती उनका ध्यान लगा कर करनी है। याद रहे कि बैहरूनी-वृत्ति में आरती ऊपरिलिखित ढंग से हो रही हो, पर अन्दरूनी वृत्ति में आरती, ख्याल अपने इष्ट के सामने कर रहा हो। पाठ की समाप्ति पर पुनः रघुवंशमणि जी की आरती घर के एक सजन ने ग्रन्थ के आगे करनी है। बाकी सजन उसके साथ आरती बोलेंगे।

पाठ की समाप्ति पर ही आरती करने वाले सजन ने शास्त्र पर हैसियत अनुसार एक रूमाला ड्यूटी वाले सजन से लेकर शास्त्र पर चढ़ाना है। रुमाला आरती समाप्त होने के पश्चात् शास्त्र पर चढ़ाना है।

प्रशाद बनाना 11

योग्यता

बिछाई वाला सजन हो तो अच्छा है, अन्य जिस नामी सजन को यह प्रशाद पंजीरी का बनाना आता हो।

युक्ति

पंजीरी का प्रशाद (पाठ के दौरान)

शनिवार सुबह ही पंजीरी का प्रशाद देसी घी में बनवा लेना है पंजीरी का प्रशाद सत्संग के ही किसी निपुण सजन ने सूजी, आटा, चीनी, घी मिलाकर बनाना है। अगर बिछाई वाले सजन बना ले तो अच्छा है। प्रशाद मन में प्रार्थना कर, नाम-अक्षर चलाते हुए ही बनाना है। आरती के बाद पंजीरी को भोग लगवा कर सब सजनों में प्रशाद बाटँना है। प्रशाद एक थाल में डालकर रुमाले से ढक कर ग्रन्थ के बाई और रख देना है। पाठ के दौरान जो भी सजन आए उसे दिन में केवल एक बार ही प्रशाद देना है। प्रशाद सबको एक-रस देना है। जयादा या कम किसी को नहीं देना।

हलवे का प्रशाद (पाठ का भोग डल जाने के बाद)

रविवार पाठ की समाप्ति पर हलवे का प्रशाद सब उपस्थित सजनों को देना है। हलवे का प्रशाद देसी घी में हलवाई ने बनाना है। पाठ की समाप्ति पर रविवार एक सजन अन्दर जाकर प्रशाद को भोग लगाएगा। यह प्रशाद विश्राम से सब सजनों को देना है। संगत को प्रशाद बाँटने के पश्चात् पाठ रखवाने वाले सजन अपने परिवार जनों और मुहल्ले वाले सजनों में यह प्रशाद बाँट सकते हैं।

भोग लगवाना 12

योग्यता

(1) नामी (2) गाना पहने हुए (3) आद् से कंचन (4) मासिक धर्म से निवृत्त (5) निष्कामी हो तो ठीक है नहीं तो उच्च वृत्ति वाला सजन।

युक्ति

प्रार्थना, चरण-शरण करके हनुमान जी का संग कर, इष्ट का ध्यान करके, ख्याल से उन्हें यह भोग लगाना है।

'भोग लवावां महाबीर रघुनाथ जी नूं, सीद प्रसाद दास नूं बक्षो शान्ति अपने नाम दा, आप दे घर विचों, आप ही लवा रहे हो, आप ही खा रहे हो, मैं-तूं, जगत तूं आप ही आप हो'।

यदि भोग लगाने वाले की वृत्ति चरणों तक पहुंचेगी तो ही प्रशाद को भोग लगेगा।

भोग आँखें बंद करके हाथ जोड़ कर सीधे बैठ कर लगाना है।

प्रशाद देना

13

योग्यता

(1) संगत का एक सजन जो (2) समवृत्ति (3) शांतिप्रिय (4) धैर्यवान (5) प्रसन्नचित्त (6) स्वस्थ (7) स्वच्छ (अन्दरूनी व बैहरूनी वृत्ति से) (8) मधुरभाषी (9) ठहराव हो।

युक्ति

प्रशाद सब सजनों को एक रस देना है। प्रशाद बाँटते समय संगत में पूर्णतया विश्राम होवे। हलवे का प्रशाद पीछे से बाँटना शुरू करना है, ताकि खलबली न होवे। किसी को थोड़ा या किसी को ज्यादा प्रशाद नहीं देना।

बिछाई समेटना 14

योग्यता

जो बिछाई वाले सजन बिछाई करेंगे वे ही बिछाई समेटेंगे।

युक्ति

पाठ की समाप्ति पर जो सजन बिछाई करेंगे वे सजन ही जिस भाव से बिछाई की थी, उसी प्रेम व श्रद्धा भाव से समेटेंगे। बिछाई समेटते समय आपस में बातें नहीं करनी। सारा सामान गिन कर अच्छी तरह समेट कर तय कर लेना है। फिर जिस सजन के घर पाठ होगा वही सजन सभा के सजनों को और सवारी को यथास्थान अर्थात् द्वारे पर पहुँचाने का प्रबन्ध करायेगा।